भारतीय जनता पार्टी की राजनीतिक विचारधारा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
के अन्तर्गत राजनीति शास्त्र में पीएच.डी. की उपाधि हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा

शोध निर्देशिका
डॉ. अंजलि सेठ
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग
समाज विज्ञान संकाय

शोधार्थिनी
सौम्या जैन

समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग, समाज विज्ञान संकाय
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा–282005

प्रस्तावना

राजनीतिक विचारधारा, राजनीतिक व्यवस्था के स्थायित्व में एक महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है, जिसके आधार पर किसी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक संगठन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। किसी भी विचारधारा विशेष का अनुसरण करने वाले लोग सम्बन्धित विचारधारा को सत्य मानते हैं, व उसके सत्यापन की आवश्यकता भी समझते हैं, अर्थात् प्रत्येक विचारधारा के समर्थक उस विचारधारा की पुष्टि के लिए कुछ सिद्धांत और तर्क भी प्रस्तुत करते हैं, और उसी विचारधारा के लिए दूसरे व्यक्तियों के ह्रदय में भी विश्वास पैदा करने का प्रयत्न करते रहते हैं।

आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में विचारधारा का विशेष प्रभाव तथा महत्व है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में विचारधारा को एक यथार्थवादी तत्व माना जाता है, यह किसी भी राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राष्ट्र और उनकी जनता को विभाजित करने वाले प्रमुख मुद्दे मुख्य रूप से वैचारिक स्वरूप के ही हैं। राष्ट्रों में युद्ध व संघर्ष के प्रमुख कारण विरोधी विचारधाराएं ही होती हैं। 20वीं सदी के प्रारम्भ में कई विचारधाराओं का विकास हुआ, जैसे रूस में समाजवादी विचारधारा, इटली में फासीवाद तथा जर्मनी में नाजीवाद। इसके अलावा शीतयुद्ध भी विचारधाराओं का ही संघर्ष था, तथा इसी आड़ में इनकी पोषक महाशक्तियों ने अपनी–अपनी विचारधारा को उचित ठहराने का प्रयत्न किया था। मॉरगेन्थाऊ लिखते हैं, जो राष्ट्र विचारधाराओं को त्यागकर स्पष्ट रूप से यह कह दे कि वह शक्ति चाहता है, और इसी कारण अन्य राष्ट्रों की समान महत्वाकांक्षाओं का विरोध करेगा, तो वह इस शक्ति संघर्ष में अपने को निश्चित रूप से बहुत ही अहितकर परिस्थिति में पाएगा। भारतीय राजनीति के अन्तर्गत भी कई विचारधाराओं का प्रभाव देखा जा सकता है। जितने भी राजनीतिक दल सत्ता में आये, सत्ता में आने के बाद सम्बन्धित राजनीतिक दल की विचारधारा का प्रभाव दिखाई पड़ा। भारतीय राजनीति में भी दोनों प्रकार की विचारधाराओं का प्रभाव दिखाई देता है, वामपंथी विचारधारा से प्रभावित राजनीतिक दल कम्युनिस्ट पार्टी व दक्षिणपंथी विचारधारा से प्रभावित राजनीतिक दल भारतीय जनता पार्टी रहा है। लेकिन इन दोनों विचारधाराओं के साथ एक मध्यममार्गीय विचारधारा भी भारतीय राजनीति में प्रभावशील रही है, जो न तो पूरी तरह दक्षिणपंथी विचारधारा का समर्थन करती है, और न ही पूर्ण तरीके से वामपंथी विचाराधारा का, यह मध्यममार्गीय विचारधारा को अपनाती है, जैसे कॉंग्रेस।

राजनीतिक दलों को उनके चरित्र के आधार पर दो भागों में वर्गीकृत किया गया है। वामपंथी (लेफ्ट विंग) और दक्षिणपंथी (राइट विंग)। वामपंथी एवं दक्षिणपंथी शब्दों की शुरूआत फ्रांसीसी क्रांति से हुई। वहाँ के राजा लुई सोलहवें ने फ्रांस के तीन वर्गों पादरी, कुली और अन्य लोगों के प्रतिनिधियों की 1789 में एक सभा बुलाई थी। इस सभा के बाँयी तरफ बैठे हुए लोग क्रांति के पक्ष में थे। वह उस व्यवस्था को बदलना चाहते थे, जिस व्यवस्था में लोकतंत्र नहीं था, दाँयी तरफ बैठे हुए लोग जो चर्च के लोग थे, सामन्त, वे राजा के शासन पक्ष में थे, अर्थात् जो व्यवस्था चली आ रही थी, उसी को चलाने के पक्ष में थे। तब राजाशाही समर्थकों को दक्षिणपंथी (राइटिस्ट या राइट विंग) और विरोधियों को वामपंथी (लेफ्टिस्ट या लेफ्ट विंग) कहा गया था। फ्रैंच नेशनल असेंबली में दाँयी तरफ बैठने वाले लोग कुलीन कारोबारी और धार्मिक वर्ग से थे, जबकि बाँयी तरफ बैठने वाले ज्यादातर लोग आम नागरिक थे। सम्राट के बाँयी ओर बैठे लोग राजशाही के साथ–साथ सामाजिक, आर्थिक परंपराओं के समर्थक थे, अर्थात् वे अपनी संपत्ति को कायम रखना चाहते थे, वहीं सम्राट के बाँयी तरफ बैठे लोग यानी वामपंथी सामाजिक समानता और नागरिक अधिकारों की माँग कर रहे थे। यह भी एक वजह है कि दक्षिणपंथियों को पूँजीवादी और वामपंथियों को समाजवादी माना जाता है। चूँकि दक्षिणपंथी बदलावों के विरोधी थे, इसलिए आगे चलकर ये कंजर्वेटिव कहलाये, जबकि बदलाव के समर्थक वामपंथी प्रगतिवादी कहलाए। इस प्रकार से ये दोंनो विचारधाराएँ एक लंबी रेखा के दो परस्पर विरोधी सिरे हैं।

हर देश में दो तरह का बुद्धिजीवी वर्ग होता है, वामपंथी और दक्षिणपंथी, जिसे क्रमशः लैफ्ट विंग इंटैलैक्चुयल्स और राइट विंग इंटैलैक्चुयल्स कहा जाता है। वामपंथियों को समाजवादी विचारधारा का माना जाता है। चूँकि दक्षिणपंथी बदलावों के विरोधी थे, तो आगे चलकर यह रूढ़िवादी और बदलाव के समर्थक वामपंथी प्रगतिवादी कहलाये। विचारधारा राष्ट्रीय शक्ति का तत्व है। आज सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति विचारधारा के आधार पर ही लोकतान्त्रिक और साम्यवादी गुटों में विभाजित है। विचारधारा सरकार को अपने नागरिकों का समर्थन प्राप्त करने में मदद देती है। कोई भी राज्य अपने दावों की पूर्ति सामर्थ्य के आधार पर नहीं, वरन् एक विशिष्ट सिद्धांत की दुहाई देकर करता है।

सैद्धान्तिक रूपरेखा

विचारधारा विश्वासों का एक समुच्चय है, जिसके द्वारा राजनीतिक क्रियाओं को प्रेरणा प्रदान की जाती है, तथा राजनीतिक कार्यों का औचित्य भी सिद्ध किया जाता है। विचारधाराएँ समुदाय की भूमिका पर बल देती हैं, और व्यक्ति की भूमिका को गौण नागरिकों का समर्थन प्राप्त करने में मदद करती है। विचारधारा शब्द समकालीन सभी शक्तिशाली विचारधाराओं सर्वाधिकारवाद साम्यवाद, फासीवाद, नाजीवाद, मार्क्सवाद, समाजवाद, उदारवाद आदि के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। वे विशिष्ट विचार जिन्हें राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयोग करते हैं तथा राष्ट्रों के व्यवहार को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

स्नाइड़र एवं विल्सन, (2011) एक विचाराधारा जीवन, समाज और शासन के प्रति निश्चित विचारों का वह समूह है जिसका प्रचार मुख्यता योजनाबद्ध सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक नारों के प्रतिपादन के रूप में अथवा युद्धकालीन नारों के रूप में निरन्तर उपदेशात्मक रूप में इस प्रकार किया गया है, कि यह एक विशिष्ट समाज समुदाय दल अथवा राष्ट्र के विशिष्ट विश्वास ही बन गए हैं।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में विचारधारा को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है, एवं विश्व के कई राष्ट्र इन विचारधाराओं से प्रभावित लोकतंत्र का ही हिस्सा है। जिसमें भारत भी एक बहुत बड़ा लोकतांत्रिक देश है, और भारत में इसी प्रकार की व्यवस्था दिखाई देती है, लेफ्टिस्ट जिसे वामपंथी विचारधारा कहा जाता है, जिसमें साम्यवाद, समाजवाद, फासीवाद, अराजकतावाद आदि विचारधाराओं के समर्थक हैं, मध्यम जो न तो पूरी तरह वामपंथी हैं और न ही पूरी तरह से दक्षिणपंथी, यह अपनी अलग विचारधारा का अनुसरण करते हैं, जिसमें आधुनिक उदारवाद, प्रगतिवाद, रुढ़िवाद आदि सम्मिलित हैं। राइटिस्ट जिसे दक्षिणपंथी विचारधारा कहा जाता है, जिसमें पूँजीवाद, शास्त्रीय उदारवाद, व गणतंत्रात्मक व्यवस्था को अपनाया जाता है।

गाँधी जी दार्शनिक अराजकतावादी थे वह मानते थे कि सत्याग्रही और अहिंसात्मक नैतिक व्यक्ति के लिए राज्य की कोई आवश्यकता नहीं होगी। गाँधी जी सबसे बड़े लोकतंत्रवादी, समाजवादी तथा व्यक्तिवादी थे, परंतु पाश्चात्य अर्थ में बिल्कुल नहीं।

समाजवाद का वास्तविक अर्थ है, सामाजिक राज्य व आर्थिक स्वतंत्रता (जय प्रकाश नारायण)। उन्होंने समाजवादी विचारधारा की स्थापना के लिए हिंसक साधनों के इस्तेमाल का विरोध किया। भारतीय राजनीति में वामपंथी विचारधारा से प्रभावित राजनीतिक दल कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया है। मार्क्स एवं फ्रैड्रिक एंगेल्स ने अपनी रचना द कम्युनिस्ट मैनिफैस्टो (1848) में स्वयं को वैज्ञानिक समाजवादी कहते हुए सेंट साइमन, चॉर्ल्स फूरियर, रॉबर्ट ओवेन को कल्पनालोकीय समाजवादी कहा। ''मार्क्स वास्तविक रूप में समाजवाद के पिता है।'' (सी0ई0एम0 जोड)। इस प्रकार से वापमंथी विचारधारा साम्यवादी सिद्धान्त से प्रभावित रही है जिसके समर्थक विचारक वी0आई0 लेनिन, जोसेफ वी0 स्टॉलिन, खुश्चेव, रोजा लॅक्जेम बर्ग, मॉओ, ब्रेझनेव, बुखरिन, कॉर्ल कॉट्स्की एवं फ्रैड्रिक एंगेल्स इत्यादि रहे है।

भारतीय राजनीति में दक्षिणपंथी विचारधारा का प्रभाव भी बहुत अधिक रहा है जिसके अन्तर्गत हम उदारवादी पूँजीवाद, गणतंत्रात्मक व्यवस्था के सिद्धान्त को देखते हैं। दक्षिणपंथी विचारधारा से प्रभावित राजनीतिक दल भारतीय राजनीति में भारतीय जनता पार्टी रही है। जिसमें हिन्दू राष्ट्रवाद और गाँधीवादी विचारधारा का समन्वय देखने को मिलता है। राष्ट्रवाद के संकल्पना को हम अरविन्द घोष जी के विचारों द्वारा समझ सकते हैं। ''राष्ट्रवाद धर्म है, यह ईश्वर की देन है, इसका निर्देशन स्वयं ईश्वर कर रहे हैं'' (अरबिन्द घोष)।

अरबिन्द जी के अनुसार भारत का राष्ट्रवाद शाश्वत है यह ईश्वर के समान अमर है। अतः इसका विनाश करना असंभव है उन्होंने 'वन्दे मातरम्' पत्र में भी लेखन किया तथा उन्होंने ''ओल्ड लैम्प्स फॉर न्यू'' नामक श्रृंखला लिखी। उन्होंने राजनीति व धर्म के सम्बन्ध को अविभाज्य माना। इसी प्रकार से विनायक दामोदर सावरकर जी उग्र राष्ट्रवादी एवं क्रांतिकारी विचारधारा के समर्थक थे। उनके द्वारा एक लेख लिखा गया हिन्दुत्व : हू इज ए हिन्दू (1923) है। सावरकर जी ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को डरपोक संगठन कहा। सावरकर एक हिन्दू राज्य की स्थापना के समर्थक थे। जबकि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वारा हिन्दू राष्ट्र का समर्थन किया गया। सावरकर जी ने हिन्दुवाद के बजाय हिन्दुत्व शब्द को प्राथमिकता दी। भारतीय जनता पार्टी भी हिन्दुत्व की राजनीति पर बल देती है। इसी प्रकार से एम0एन0 रॉय क्रांतिकारी राष्ट्रवादी के रूप में जाने जाते हैं। जॉन लॉक को जो उदारवाद के जन्मदाता हैं।

उन्होंने दक्षिणपंथी विचारधारा के अंतर्गत उदारवादी सिद्धान्त को बताया है। लॉक को पूँजीवाद का जन्मदाता कहा (सी0बी0 मैकफॅर्सन)। रूसो को को राष्ट्रवाद के विचार का सैद्धान्तिक जन्मदाता माना जाता है। इस प्रकार से भारतीय राजनीति में बहुत ही विचारधाराओं का प्रभाव रहा है जिनको अलग–अलग सिद्धान्तों के द्वारा समझा जा सकता है। दक्षिणपंथी विचारधारा के अन्तर्गत भी कई सिद्धान्तों का समन्वय देखने को मिलता है। भारतीय राजनीति भी विचाराधाराओं के प्रभाव से अछूती नहीं रही है। भारतीय राजनीति में समय–समय पर जो भी राजनैतिक दल सत्ता में आये, सम्बन्धित दलों ने अपनी–अपनी विचारधारा से जनता को प्रभावित करने का प्रयत्न किया तथा उस विचारधारा का प्रभाव उनकी नीतियों पर दृष्टिगत होता है।

साहित्य पुर्नावलोकन

- **गिलेन (1993)** ने अपने लेख 'राष्ट्रवाद एवं वास्तविक प्रतिनिधि में विभिन्न राष्ट्रवाद से संबंधित विचारधाराओं का विश्लेषण किया है। संबंधित अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। गिलेन ने पश्चिम के राष्ट्रवाद की विचारधारा को गलत चेतना पर आधारित बताया। उन्होंने अप्पादुराई, व्हाइट, रेनन, मैक्लाचन, जेम्स तथा स्मिथ इत्यादि के दृष्टिकोण की भी चर्चा की, जिसमें राष्ट्रवाद तथा राष्ट्रीय परिकल्पना को दृष्टिगत किया। लेखक ने अपने लेख में बताया है कि कैसे राष्ट्रवाद को यथार्थवादी प्रतिनिधि द्वारा समर्थन प्रदान होता है, यह एक विधि है, जिसमें एक आत्मनिष्ठ, व्यक्तिनिष्ठ अनुभव को वस्तुनिष्ठ एवं ऐतिहासिक ढाँचों में स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। लेखक ने विस्तृत विश्लेषणात्मक बिन्दु दिये हैं जो इतिहास के साथ–साथ वर्तमान में भी महत्वपूर्ण है, जो लोगों में विद्यमान राष्ट्रवाद की चेतना को समझने में सहायक है। अन्त में उन्होंने विश्लेषण किया कि उत्तर–आधुनिकता जो सांस्कृतिक धागे में जुड़ी है, जिस पर राष्ट्रवाद टिका है, वह ढीला पड़ रहा है, किन्तु यह भी संभव है कि जैसे यथार्थवाद फैला है, उसी तरह इसका भी प्रसार होता है।
- **हलिंग एवं रॉय (1996)** इस पुस्तक में दोनों लेखकों द्वारा विश्लेषण किया गया कि संपूर्ण विश्व में बहुत सारी विचारधाराएँ प्रचलित रही हैं, जैसे उदारवाद, समाजवाद, पूँजीवाद, मार्क्सवादी,

लेनिनवाद और स्टेलिनवाद, राष्ट्रवाद, अपरिवर्तनवादी परंपरागत, धार्मिक कट्टरवाद आदि। इस पुस्तक की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें सभी विचारधाराओं का तुलनात्मक अध्ययन कर विचारधाराओं के महत्व को जान सकते हैं। अराजकतावादियों के विरोध में मार्क्सवादी विचारधारा, अमेरिका और फ्रांस में छात्रों का विद्रोह साम्यवादी विचारधारा का सत्ता में न रहने के कारण। अंत में लेखक ने सुझाव दिया है कि विचारधाराओं से संबंधित पुस्तक में शीर्षक में फासीवाद नाजीवाद हमेशा रहते है, उसके साथ राष्ट्रवाद और अन्तर्राष्ट्रीयवाद को भी बताया जाना चाहिए।

- **हेवुड (2007)** ने अपने अध्ययन के अन्तर्गत राजनीतिक व्यवस्था से सम्बन्धित विचारधाराओं के अन्तर्गत व्याख्या कि है कि किसी भी देश की राजनैतिक व्यवस्था कई विचारधारा पर आधारित होती है। क्योंकि विचारधारा के आधार पर ही, राजनैतिक व्यवस्था चलती है। लेखक ने विभिन्न विचारधाराओं के बारे में बताया है जिसमें प्राचीन विचारधाराओं में साम्राज्यवाद, अराजकतावाद आदि रही है व नवीन विचारधारा के अन्तर्गत लेखक ने नारीवाद विचारधारा, धार्मिक विचारधारा, परिस्थिति विज्ञान से सम्बन्धित विचारधारा और बहुसंस्कृतिवाद के बारे में बताया है जो राजनैतिक व्यवस्थाओं को प्रभावित करती है।
- **बिसवास (2010)** भारत में हिन्दू राष्ट्रवाद के बारे में संयुक्त राज्य अमेरिका में राष्ट्र प्रवासी संदर्भों पर बातचीत वालों की इस कार्य में खोजबीन की गई। लेखक ने भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी पर भी ध्यान केन्द्रित किया, जो हिन्दू राष्ट्रवादी नेता के रूप में जाने जाते हैं। अमेरिका में भारत की अव्यवस्था को समझने के लिए एक अच्छा संदर्भ दिया। लेखक द्वारा दी गई खोज गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी जी और विपक्षी समर्थन और इसे लागू करने पर केन्द्रित है। लेख में भारतीय अमेरिकी धर्मनिरपेक्ष के तरीकों के बारे में पता लगाया गया है। कार्यकर्ताओं ने अमेरिका में धार्मिक राष्ट्रीयता समूह के पदों को चुनौती दी है। इस अध्ययन में हमें राष्ट्रवाद की विविधताओं की व्याख्या भी पता चलती है, और यह अंतर राष्ट्रीय राजनीतिक अंतरिक्ष में संचालित समूहों के बीच मौजूद है। कुल मिलाकर यह लेख हिन्दू राष्ट्रवाद पर केन्द्रित है और दोनों पक्षों को मिलाकर यह लेख हिन्दू राष्ट्रवाद पर केन्द्रित है

अर्थात् दोनों पक्षों का विश्लेषण करता है, इसके बारे में विश्व हिन्दू परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और संघ परिवार के राष्ट्रवाद के बारे में और गुजरात के मुख्यमंत्री जी द्वारा अपने राज्य में आर्थिक सुधारों के प्रति मोदी जी की नीति में बदलाव देखने को मिलता है।

- **सैयद (2014)** लेखक ने अपने लेख में उग्र हिन्दूवाद को भूण्डलीकरण के समय में अपनी पुस्तक में विश्लेषित किया है। लेखक ने भूमण्डलीकरण का प्रभाव, मत देने के व्यवहार और हिन्दू और अन्य धर्म के समर्थकों में देखा गया है। लेखक का लेख विश्लेषण और मूल प्रतिभूति पर आधारित है। यह लेख भारत में उन सामाजिक–राजनीति तत्वों पर प्रकाश डालता है, जो पूर्व हिन्दूवादी समूह या उग्र हिन्दूवादी को चुनौती देते हैं, और अल्पसंख्यकों को अलग करते हैं। अंत में लेखक ने अपने लेख में भूमण्डलीय के समय में साम्प्रदायिक विचारधारा के प्रभाव के बारे में बताया, तथा यह भी बताया कि अल्पसंख्यक नेता अपने समुदाय की मुख्य समस्याओं पर बल देते हैं, यह विस्तारपूर्वक समझाने का प्रयास किया है।

- **वाजपेयी (2016)** प्रस्तुत लेख में लेखक ने अपने काम में ''भारतीय जनता पार्टी के 21वीं सदी में मुद्दों और चुनौतियों'' में भारतीय राजनीतिक प्रणाली में भारतीय जनता पार्टी की घटना का विश्लेषण किया। लेखक का कार्य द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित है और उन्होंने सैद्धांतिक अवलोकन के रूप में तीन भागों में अपने काम पर चर्चा की एक राजनीतिक संगठन के रूप में भारतीय जनता पार्टी की पृष्ठभूमि, दिए गए विश्लेषणात्मक ढाँचे के भीतर भारतीय जनता पार्टी की ताकत और कमजोरियों का विश्लेषण करती है। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी को सांप्रदायिक पार्टी बताया। उन्होंने विश्लेषण किया कि हमारी सरकार बनाने के लिए समान विचारधारा वाले दलों के बीच भी पार्टियों का गठबंधन भारत की एक सामान्य प्रक्रिया है, लेकिन अंतर्निहित क्षेत्र उभर रहा है। इन घटनाओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। अतः निष्कर्षतः राजनीतिक दलों की वैचारिक श्रेणियों को निश्चित तत्व के रूप में नहीं माना जाना चाहिए, लेकिन प्रचलित आकस्मिकताओं के प्रकाश में गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। लेखक का अध्ययन अपने मूल सांस्कृतिक राष्ट्रवादी एजेंडे के साथ भारतीय जनता पार्टी और हिन्दू राष्ट्रवाद की विचारधारा के ऐतिहासिक विकास पर प्रकाश डालता है, भारतीय जनता पार्टी अपने

विकास एजेंडा के साथ आई, और वैश्वीकरण का समर्थन जारी रखा और अर्थव्यवस्था के विकास को बनाए रखने के लिए बुनियादी ढाँचे के विकास पर ध्यान केंद्रित किया किया।

- **स्ट्रौम (2017)** लेखक द्वारा प्रस्तुत लेख में राष्ट्रवाद को विस्तृत रूप में समझाने का प्रयास किया है, इसमें उन्होंने विभिन्न लेखकों के विचारों को व्यक्त किया है। लेखक ने राष्ट्रवाद के उद्भव के बारे में बताया है। लेखक ने कहा है कि आधुनिक विचार मानता है, कि राष्ट्र और राष्ट्रवाद दोनों आधुनिकता से जुड़े हैं। यह विचार जॉन ग्रेविली की पुस्तक में व्यक्त किया है। राष्ट्रवाद के उदय में लेखक ने अमेरिका, इंग्लैण्ड का उदाहरण दिया है। एण्डरसन ने सांस्कृतिक तत्व पर पर बल दिया है, राष्ट्रवाद प्रतिदिन जीवन में किस प्रकार कार्य करता है, इस बात पर उन्होंने अपने लेख में विचार व्यक्त किए हैं। अन्त में लेखक ने राष्ट्रवाद की सीमाओं को व्यक्त करते हुए राष्ट्रवाद के प्रभाव और दोष को व्यक्त किया।
- **राजदान (2017)** प्रस्तुत लेख में लेखक ने भारत के विचार में, वर्तमान में भारत में देशभक्ति और राष्ट्रवाद की स्थिति का सही विश्लेषण करता है। लेखक एन.डी.टी.वी. न्यूज चैनल की रिपोर्टर हैं और उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभव और हमारे देश में घटित कुछ घटनाओं को प्रस्तुत किया है। उसने अपने अध्याय के शीर्षक में भी लिखा है लेखक ने इस राष्ट्रवाद के नये अर्थ के तहत चर्चा की, वर्तमान में उसने कई उदाहरण दिये हैं कि सोशल मीडिया पर बोलना राष्ट्रवाद है लेकिन अगर हम सरकार से कोई सवाल पूछते हैं तो हम बन जाते हैं एंटीनेशनल। लेखक ने सर्वोच्च न्यायालय के बारे में चर्चा की 30 मिलियन मामले लंबित हैं, लेकिन अदालत के पास यह निर्णय लेने का समय है कि राष्ट्रगान को सिनेमा में गाया जाना चाहिए या नहीं। हमारे देश में स्वतंत्रता और देशभक्ति के नये अर्थ का प्रतिनिधित्व करता है।
- **कुमार, रामचन्द्रप्पा (2018)** संबंधित लेख में कर्नाटक राज्य में दक्षिणपंथी राजनीति के एकत्रीकरण के प्रभाव को बताया गया है, लेखक का इस लेख में अध्ययन करने का मुख्य उद्देश्य दक्षिणपंथी राजनीति से प्रभावित भारतीय जनता पार्टी की हिन्दुत्व की राजनीति को जानना है। प्रस्तुत लेख गुणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। उनका मानना था कि भारतीय जनता पार्टी का भारी बहुमत के साथ सत्ता में वापस आने का कारण जातिवाद पर आधारित

चुनाव है, जिसकी वह से समाज के कमजोर वर्ग के लोगों का विकास उस प्रकार से नहीं हो पा रहा है, जिस प्रकार से होना चाहिए। भारतीय जनता पार्टी के अन्तर्गत अन्य हिन्दूवादी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद् प्रभावी रहे हैं। निष्कर्षतः इस लेख में लेखक द्वारा कर्नाटक में भारतीय जनता पार्टी के हिन्दुत्व की राजनीति के प्रभाव को बताया गया है।

- **डोरन (2019)** ने अपने लेख में उत्तर औपनिवेशिक प्रति औपनिवेशिक, राष्ट्रवाद और इतिहास में एडवर्ड गायत्री सीवक तथा होमी भाभा जैसे विचारकों के विचारों का विश्लेषण किया है। इन तीनों विचारकों की उत्तर औपनिवेशिक काल के 'पवित्र त्रिमूर्ति' के रूप में पहचान की जाती है। उसमें भी मुख्यतः गायत्री सीवक के विचार राष्ट्रवाद एवं इतिहास पर केन्द्रित अधिक है। अपने इस लेख में उन्होंने प्रश्न उठाया कि क्यों प्रायः उत्तर औपनिवेशिक लेखक राष्ट्रवाद के प्रति संकीर्ण, जबकि इतिहास के प्रति विस्तृत नजरिया अपनाते हैं, तथा उन्होंने इस पर पुर्नविचार करने को कहा है। उन्होंने विश्लेषण किया कि कैसे राष्ट्रवाद की निंदा की, तथा इतिहास को भी कम आंका है, जो मजबूत अकादमी प्रभाव में कई उत्तर औपनिवेशिक विद्वानों जो संरचनावाद एवं अन्य प्रति विचारकों से जुड़ाव रखते हैं, लेखकों ने कुछ अन्य विचारकों के मत जैसे माइकल एवं एंटोनियों नगरी का विश्लेषण किया, तथा पाया कि उन्होंने भी राष्ट्रवाद का नकारात्मक मूल्यांकन किया। उन्होंने औपनिवेशिक बुर्जुआ वर्ग के नेतृत्व की भूमिका तात्कालिक समय के दृष्टिकोण का भी विश्लेषण किया। अपने सम्पूर्ण कार्य में राष्ट्रवाद पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण बनाये रखा। निष्कर्षतः सभी लेखों के आधार पर कुछ आवश्यक तथा परीक्षण, उत्तर औपनिवेशिक विचारकों तथा मतों का गहन रूप से अध्ययन किया।

समस्या कथन

संपूर्ण विश्व में अनेकों राजनीतिक विचारधाराएँ प्रचलित रही हैं, जिसमें साम्यवादी, पूँजीवादी, समाजवादी, फासीवादी, आदि विचारधाराएँ सम्मिलित है। समय–समय पर सभी देशों में किसी–न–किसी विचारधारा ने सम्बन्धित देशों की राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित किया है। इसी प्रकार से भारतीय राजनीति में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अनेक राजनैतिक दलों का उदय हुआ व सभी राजनैतिक दलों की विचारधाराएँ भी अलग–अलग रही हैं। भारत में वामपंथी मध्यममार्गीय व दक्षिणपंथी तीनों प्रकार की

विचारधाराओं के प्रभाव को देखा जा सकता है। 20वीं व 21 वीं सदी की राजनीति समय के साथ काफी बदल चुकी है। कई दल समय के साथ अपनी नीति को बदलते रहते हैं, इसलिए हम भारतीय राजनैतिक दल को विशेष विचारधारा के आधार पर वर्गीकृत नहीं कर सकते। विशेषकर गठबन्धन की राजनीति में तो यह तय करना एक सरल कार्य नही हैं। भारतीय राजनीति में बहुत विभिन्नता है, जिसमें समय–समय पर वामपंथी, दक्षिणपंथी, मध्यममार्गीय विचारधाराओं का प्रभाव रहा है। वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी सत्तारूढ़ दल है। दक्षिणपंथी विचारधारा की जो विशेषताएँ है, उन्हीं के आधार पर ही भारतीय जनता पार्टी को दक्षिणपंथी विचारधारा के रूप में जाना जाता है। दक्षिणपंथी विचारधारा से सम्बन्धित होने के कारण ही अन्य दल समय–समय पर भारतीय जनता पार्टी का विरोध करते हैं, तथा उसे साम्प्रदायिक प्रवृत्ति का प्रेरक मानते हुए अतिराष्ट्रवाद का द्योतक कहकर उसकी आलोचना करते हैं। भारतीय जनता पार्टी ने तीन दशक से चल रही गठबंधन की राजनीति पर आधारित सरकार को समाप्त करके पूर्ण बहुमत की एक दलीय सरकार बनाकर भारतीय राजनीति में नवीन अध्याय जोड़ा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जिसका व्यवस्थित रूप में अभी तक अध्ययन नहीं हो पाया है, कि कौन सा राजनैतिक दल किस विशेष विचारधारा का अनुसरण करता है, राजनीति को प्रभावित करने वाली विचारधाराओं के प्रभाव और भूमिका से सम्बन्धित अध्ययनों को अभाव रहा है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारत में दक्षिणपंथी विचारधारा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. दक्षिणपंथी विचारधारा के रूप में भारतीय जनता पार्टी के उदय एवं विकास का अध्ययन करना।
3. राष्ट्रवाद बनाम सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का मूल्यांकन करना।
4. भारतीय जनता पार्टी की हिन्दुत्व की राजनीति का विश्लेषण करना।
5. भारतीय जनता पार्टी का पूँजीवादी समर्थक विचारधारा के रूप में विश्लेषण करना।

परिकल्पना

1. भारत में दक्षिणपंथी विचारधारा का उदय स्वतंत्रता पश्चात् देरवने को मिलता है।
2. भारतीय जनता पार्टी का उदय 80 के दशक के पश्चात् हुआ।

3. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ने राष्ट्रवादी अवधारणा को प्रभावित किया है।

4. भारतीय जनता पार्टी हिन्दुत्व की राजनीति पर बल देती है।

5. भारतीय जनता पार्टी पूँजीवादी समर्थक विचारधारा के रूप में कार्यशील रही है।

अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत शोधकार्य भारतीय राजनीति में दक्षिणपंथी विचारधारा के क्षेत्र में अध्ययन करने वाले शोधकर्ता एवं छात्रों के लिये महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। भारतीय राजनीति में दक्षिणपंथी विचारधारा को भारतीय जनता पार्टी के विशेष संदर्भ में प्रभाव को जानने के लिए यह एक महत्वपूर्ण शोध कार्य है।

षोध पद्धति

- **शोध अभिकल्प (Research Design)** – प्रस्तुत शोध कार्य विश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा किया जायेगा।
- **तथ्य–संकलन (Data Collection) –** प्रस्तुत अध्ययन के लिए आवश्यक तथ्य संकलन द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त किया जाएगा।

द्वितीयक स्त्रोत

द्वितीयक स्त्रोत में प्रमुख रूप से पुस्तकें, समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं, जर्नल्स व ई– जर्नल्स, व सरकारी दस्तावेजों इत्यादि का प्रयोग किया जाएगा।

प्रस्तावित अध्याय

1. प्रस्तावना
2. भारतीय राजनीति में दक्षिणपंथी विचारधारा का इतिहास।
3. भारतीय राजनीति में दक्षिणपंक्षी विचाारधारा का उदय व विकास।
4. राष्ट्रवाद बनाम सांस्कृतिक राष्ट्रवाद।
5. भारतीय जनता पार्टी एवं हिन्दुत्व की राजनीति।
6. भारतीय जनता पार्टी का पूँजीवादी विचारधारा के रूप में विश्लेषण।
7. निष्कर्ष

References

- Anderson, Perry (2012), "The Indian Ideology", Printed Maple Press, New York.
- Bairathi, Shashi (1987), "Communism and Nationalism in India A Study of Inter-Relationship", Anamika Prakashan, Noida.
- Bajpai, Arunoday (2016), "BJP 21st Century: Issues and Challenges", Global Multidisciplinary Research Journal, Vol. 1, p. 15-25.
- Bakshi, S. R (2007), "Dawn of Indian Nationalism", Volume II. Vista International Publishing House, Delhi.
- Bardot, Leon. P, Phillips. John. A (2017), "Political Ideologies Their Origins and Impact", Rutledge Taylor & Francis Group, London and New York.
- Bhambri, C. P (2018), "Ideology and Political Party in India", Economic and political weekly. Vol.3, p-16.
- Biswas, Bidisha (2010), "Nationalism, Nations and Nationalism", Journal of the Association for the Study of Ethnicity and nationalism, vol.16, p- 696-714.
- Brass, Paul, R. (1983), “Caste, faction and party in Indian Politics’’, Vol. 2, Chanakya Publications, Delhi.
- Brass, Paul, R. (2011), “Indian Political Life”, Loss Angeles, Sage Publication, New Delhi.
- Doran, Christine (2019), "Post-colonialism, Anti-Colonialism, National and History, International Studies", Jawaharlal Nehru University, SAGE publications, vol. 56, p-25.
- Drucker, H.M. (1974), "The Political Uses of Ideology" The Mcmillan Press Ltd., London.
- Fadia, B. L (2011), "International Politics", Sahitya Bhawan, Agra. p- 133.
- Finkel, Matt, (2016), "Theories of Nationalism: A Brief Comparison of Realist and Constructivist Ideas o the Nation", INQUIRIES, vol-8, no. 10.
- Gellner, Ernest. John, Breuilly (2006), "Nations and Nationalism", Second Edition, Blackwell Publishing House.
- Gillen, Paul (1993), "Nationalism and Realist Representation", Melbourne Journal of Politics, vol-21.

- Heywood, Andrew (2000), "Palgrave Key Concepts", Key Concepts in India, Palgrave Macmillan.
- Hoffman, John. Graham, Paul (2010), "Introduction to Political Ideologies", Pearson Education, Pvt. Ltd. Uttar Pradesh.
- Islam, Shamsul, (2006), “Golwalkar’s we or our Nationhood defind: A critique”, Pharas Media and Publishing Pvt, Ltd, New Delhi.
- Jaffrelot, Christophe, (1999), “Hindu Nationalist Movement and Indian Politics’’, Penguin Books, New Delhi.
- Jaffrelot, Christophe, (2004), “Hindu Nationalism and Indian Politics”, Oxford University Press, New Delhi.
- Jaffrelot, Christophe, (2019), “Majoritarian State: Hoe Hindu Nationalism is changing India”, Harper Collins, Noida.
- John, T. Jost. Federico, M. Christopher, Napier, L. Jaime, (2009), "Political Ideology: Its Structure Functions", and Elective Affinities, Annual Reviews, Psychol.
- Kumar, S. Sunil, Ramchandrappa, G. T. (2018), "Emergence and Consolidation of Rightist Politics in Karnataka", International Journal of Research in Social Sciences, vol. 8 Issue 2 http://www.ijmra.us.
- Kuruvachira, J (2008), "Politicisation of Hindu Religion in Postmodern India, an Anatomy of the Worldviews, Identities and Strategies of Hindu Strategies of Hindu Nationalist in Bhartiya Janta Party", Rawat Publications, Jaipur.
- Ludden, David (2005), "Making India Hindu, Religion Community, and the Politics of Democracy in India", Oxford University Press, New Delhi.
- Macridis, C, Roy Hulling, (1996), "Contemporary Political Ideologies Movement and Regimes", Pearson Education.
- Mohanty, Manoranjan (2000), "Contemporary Political Theory", Sanskriti Publication, New Delhi.
- Narayan, Badri (2009), “Fascinating Hindutva”, Sage Publication, New Delhi.

- Purandare, Vaibhav (2019), “Savarkar- the true story of the father of Hindutva,” Juggernaut Books, New Delhi.
- Rathod, P.B. (2006), "Reflection on Political Ideologies", Commonwealth Publishers, New Delhi.
- Razdan, Nidhi (2017), "Introduction The New Normal: The Idea of India, Left, Right, Centre the Idea of India", Penguin Random House, India.
- Roy, Niharranjan (1973), "Nationalism in India an Historical Analysis of its Stress and Strains", Aligarh Muslim University, Aligarh.
- Savarkar, Vinayak, D. (1923), “Hindutva”, Hindi Sahitya Sadan, New Delhi.
- Sayed, Mostafa. Mostafavi (2017), "Globlisation and Hindu Radicalism in India", https://www.academia.edu/14531877
- Sharda, Ratan (2018), "RSS360° Demystifying Rashtriya Swayamsevak Sangh", Bloomsbury Pvt. Ltd., New Delhi.
- Sinha, Shakti, Roy, Himanshu (2019), "Patel-Political Ideas and Policies", SAGE Publications India, Pvt. Ltd.
- Sirdesai, Rajdeep (2015), 2014 ''चुनाव जिसने भारत को बदल दिया'', प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
- Storm, Eric (2017), "European History Quarterly, SAGE Publications", vol. 48, p-113-129.
- Tharoor, Shashi, (2018), “Why I am Hindu”, Aleph Book Company, New Delhi.
- Varshney, Ashutosh (2002), “Ethic conflict and civic life,” Oxford University Press, New Delhi.
- Varshney, Ashutosh, (2004), “India and the Politics of Developing Countries’’, Sage Publication, New Delhi.
- कुमार, शिव, गोयल (2018), "मैं सावरकर बोल रहा हूँ", प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।